



MP - SET

समाजशास्त्र

Madhya Pradesh State Eligibility Test

पेपर 2 || भाग - 2



Index

इकाई - III : मौलिक अवधारणाएँ और संस्थाएं

1.	समाजशास्त्रीय अवधारणाएं <ul style="list-style-type: none"> ➤ सामाजिक संरचना ➤ संस्कृति ➤ नेटवर्क ➤ प्रस्थिति और भूमिका ➤ पहचान ➤ समुदाय ➤ प्रवासी ➤ मूल्य, मानदंड और नियम ➤ पर्सनहुड, हैबिटस और एजेन्सी ➤ अधिकारी-तंत्र, सत्ता और प्राधिकार 	1
2.	सामाजिक संस्थाएं <ul style="list-style-type: none"> ➤ विवाह, परिवार और नातेदारी ➤ अर्थव्यवस्था ➤ राज्य शासन विधि ➤ धर्म ➤ शिक्षा ➤ कानून और रीति-रिवाज 	39
3.	सामाजिक स्तरीकरण <ul style="list-style-type: none"> ➤ सामाजिक विभेद, पदानुक्रम, असमानता और पार्श्वीकरण ➤ जाति और वर्ग ➤ लिंग, लैंगिकता और दिव्यांगता ➤ प्रजाति, जनजाति और नृजातीयता 	70
4.	सामाजिक परिवर्तन और प्रक्रियाएं <ul style="list-style-type: none"> ➤ उद्विकास और प्रसार ➤ आधुनिकीकरण और विकास ➤ सामाजिक रूपान्तरण और वैश्वीकरण ➤ सामाजिक गतिशीलता 	114

इकाई - IV : ग्रामीण एवं नगरीय रूपान्तरण

5.	ग्रामीण एवं खेतिहर समाज <ul style="list-style-type: none"> ➤ जाति-जनजाति बस्तियां ➤ कृषक सामाजिक संरचना और उभरते वर्ग सम्बन्ध ➤ भूस्वामित्व और कृषक सम्बन्ध ➤ कृषक अर्थव्यवस्था का हास, विकृषिकरण और प्रवसन ➤ कृषक असंतोष और खेतिहर आंदोलन ➤ बदलते अंतर-समुदाय सम्बन्ध और हिंसा 	135
6.	नगरीय समाज <ul style="list-style-type: none"> ➤ नगरवाद, नगरीयता और नगरीकरण ➤ कस्बे, शहर और महानगर ➤ उद्योग, सेवा और व्यवसाय ➤ पड़ोस, गंदी बस्तियां और नृजातीय अंतःक्षेत्र ➤ मध्यमवर्ग और गेटेड कम्युनिटी ➤ नगरीय आंदोलन और हिंसा 	159

III UNIT

मौलिक अवधारणाएँ और संस्थाएँ

1: समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का परिचय और सामाजिक संरचना, संस्कृति

1. मूल अवधारणाओं और संस्थाओं का अवलोकन

1.1 परिभाषा और दायरा

इकाई 3 में आधारभूत समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ, संस्थाएँ, स्तरीकरण और परिवर्तन प्रक्रियाएँ शामिल हैं:

- **समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ** : सामाजिक जीवन को समझने के लिए सामाजिक संरचना, संस्कृति और पहचान जैसी अवधारणाएँ।
- **सामाजिक संस्थाएँ** : संगठित प्रणालियाँ (जैसे, परिवार, धर्म) जो व्यवहार को आकार देती हैं।
- **सामाजिक स्तरीकरण** : पदानुक्रम और असमानताएँ (जैसे, जाति, लिंग)।
- **सामाजिक परिवर्तन और प्रक्रियाएँ** : आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण जैसे तंत्र सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करते हैं।
- **कार्यक्षेत्र** : भारतीय समाज पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, सूक्ष्म (जैसे, पहचान) और वृहद (जैसे, वैश्वीकरण) परिप्रेक्ष्यों को जोड़ते हुए सामाजिक संगठन, असमानता और गतिशीलता का विश्लेषण करना।

1.2 प्रासंगिकता

- **संकल्पनात्मक स्पष्टता** : परिभाषाएँ (जैसे, सामाजिक संरचना, मानदंड)।
- **भारतीय अनुप्रयोग** : भारतीय संदर्भ में जाति, परिवार और सामाजिक गतिशीलता।
- **सैद्धांतिक विश्लेषण** : अवधारणाओं को विचारकों से जोड़ना (उदाहरण के लिए, दुर्खीम, वेबर)।
- हाल के रुझान (2020-2025) डिजिटल संस्कृति, नीतिगत प्रभाव (उदाहरण के लिए, एनईपी 2020) और समावेशन (उदाहरण के लिए, लिंग, विकलांगता) पर जोर देते हैं, जिससे यूनिट 3 परीक्षा की सफलता के लिए महत्वपूर्ण बन जाती है।

1.3 इकाई की संरचना

पाठ्यक्रम में चार उप-इकाइयाँ शामिल हैं:

- **समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ** : सामाजिक संरचना, संस्कृति, नेटवर्क, स्थिति/भूमिका, पहचान, समुदाय, प्रवासी, मूल्य/मानदंड/नियम, व्यक्तित्व/आदत/एजेंसी, नौकरशाही/शक्ति/प्राधिकरण।
- **सामाजिक संस्थाएँ** : विवाह, परिवार, रिश्तेदारी, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, शिक्षा, कानून, रीति-रिवाज।
- **सामाजिक स्तरीकरण** : अंतर, पदानुक्रम, असमानता, हाशिए पर होना, जाति, वर्ग, लिंग, लैंगिकता, विकलांगता, नस्ल, जनजाति, जातीयता।
- **सामाजिक परिवर्तन और प्रक्रियाएँ** : विकास, प्रसार, आधुनिकीकरण, विकास, वैश्वीकरण, सामाजिक गतिशीलता।

यह भाग सामाजिक संरचना और संस्कृति पर केंद्रित है, तथा समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के लिए आधार तैयार करता है।

2. समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ: एक परिचय

2.1 परिभाषा और भूमिका

समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ अमूर्त विचार या ढाँचे हैं जो सामाजिक घटनाओं, अंतःक्रियाओं और संस्थाओं को समझने में मदद करते हैं। वे सूक्ष्म-स्तरीय अंतःक्रियाओं (जैसे, पहचान) से लेकर वृहद-स्तरीय संरचनाओं (जैसे, नौकरशाही) तक समाज का विश्लेषण करने के लिए सैद्धांतिक लेंस प्रदान करते हैं।

- **उदाहरण** : सामाजिक संरचना (संबंधों के पैटर्न), संस्कृति (साझा विश्वास), स्थिति (सामाजिक स्थिति)।
- **भूमिका** :
 - अवलोकनों को व्यवस्थित करें (जैसे, एक संरचना के रूप में जाति)।
 - अनुसंधान का मार्गदर्शन करें (जैसे, त्योहारों का सांस्कृतिक अध्ययन)।
 - सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ें (उदाहरण के लिए, दुर्खीम को भारतीय समाज पर लागू करें)।

2.2 भारतीय समाजशास्त्र से प्रासंगिकता

भारत में, समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं:

- **जाति और वर्ग** : संरचनात्मक और सांस्कृतिक घटना के रूप में।
- **विविधता** : क्षेत्रीय, धार्मिक और भाषाई विविधताएँ।
- **परिवर्तन** : वैश्वीकरण, डिजिटल संस्कृति के प्रभाव।
- **उदाहरण** : सामाजिक संरचना जाति पदानुक्रम की व्याख्या करती है; संस्कृति दिवाली के प्रतीकात्मक अर्थों की व्याख्या करती है।

3. सामाजिक संरचना

3.1 परिभाषा और महत्व

सामाजिक संरचना सामाजिक संबंधों और संस्थाओं के संगठित पैटर्न को संदर्भित करती है जो समाज को आकार देते हैं, स्थिरता और व्यवस्था प्रदान करते हैं। इसमें भूमिकाएँ, मानदंड और संस्थाएँ (जैसे, परिवार, जाति) शामिल हैं।

- **मूल विचार** : सामाजिक संरचना समाज का ढांचा है, जो व्यक्तिगत कार्यों को बाधित और सक्षम बनाती है।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **एमिल दुर्खीम** : सामाजिक तथ्य के रूप में सामाजिक संरचना (जैसे, व्यवहार को आकार देने वाले मानदंड)।
 - **ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन** : भूमिकाओं और स्थितियों के नेटवर्क के रूप में संरचना।
 - **टैल्कोट पार्सन्स** : कार्यात्मक प्रणालियों के रूप में संरचना (उदाहरणार्थ, AGIL मॉडल)।
- **उद्देश्य** :
 - सामाजिक व्यवस्था (जैसे, जाति पदानुक्रम) की व्याख्या करता है।
 - अंतःक्रियाओं का विश्लेषण करता है (जैसे, परिवारों में भूमिका संघर्ष)।
 - परिवर्तन को प्रासंगिक बनाता है (जैसे, संरचना पर शहरीकरण का प्रभाव)।

3.2 सामाजिक संरचना के घटक

- **स्थितियाँ** : सामाजिक पद (जैसे, ब्राह्मण, शिक्षक)।
- **निर्धारित** : जन्म के समय निर्दिष्ट (जैसे, जाति)।
- **प्राप्त** : प्रयास से अर्जित (जैसे, पेशा)।
- **भूमिकाएँ** : पदों के लिए अपेक्षित व्यवहार (जैसे, पुरोहितीय कर्तव्य)।
- **मानदंड** : आचरण को निर्देशित करने वाले नियम (जैसे, जातिगत अन्तर्विवाह)।
- **संस्थाएँ** : संगठित प्रणालियाँ (जैसे, परिवार, धर्म)।
- **नेटवर्क** : व्यक्तियों के बीच संबंध (जैसे, जाति संघ)।

स्मृति सहायक : एसआरएनआईएन (स्थितियाँ, भूमिकाएँ, मानदंड, संस्थाएँ, नेटवर्क)।

3.3 भारतीय संदर्भ में सामाजिक संरचना

- **संरचना के रूप में जाति** : सामाजिक समूहों का पदानुक्रमित संगठन (जैसे, वर्ण व्यवस्था)।
- **उदाहरण** : गांव के अनुष्ठानों में ब्राह्मण-क्षत्रिय की भूमिका।
- **संरचना के रूप में परिवार** : संयुक्त परिवार की भूमिकाएँ और मानदंड (जैसे, पितृसत्तात्मक अधिकार)।
- **धर्म की संरचना** : मंदिर पदानुक्रम और जाति-आधारित पहुंच।
- **आधुनिक परिवर्तन** : शहरीकरण और डिजिटल नेटवर्क जाति और पारिवारिक संरचनाओं को नया आकार दे रहे हैं।
- **उदाहरण** : दलित आंदोलन सक्रियता के माध्यम से जाति संरचना को चुनौती दे रहे हैं।

3.4 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

- **कार्यात्मकतावाद (दुर्खीम, पार्सन्स)** : सामाजिक संरचना व्यवस्था बनाए रखती है (उदाहरणार्थ, जाति श्रम विभाजन सुनिश्चित करती है)।
- **संघर्ष सिद्धांत (माक्स)** : संरचना शक्ति असमानताओं को दर्शाती है (जैसे, उच्च जाति का प्रभुत्व)।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (ब्लूमर)** : संरचना अंतःक्रियाओं से उभरती है (उदाहरण के लिए, गांवों में जातिगत भूमिकाओं पर बातचीत)।
- **भारतीय उदाहरण** : जाति को एकीकृत करने वाला कार्यात्मक दृष्टिकोण (धुर्ये) बनाम दमनकारी के रूप में संघर्षवादी दृष्टिकोण (अम्बेडकर)।

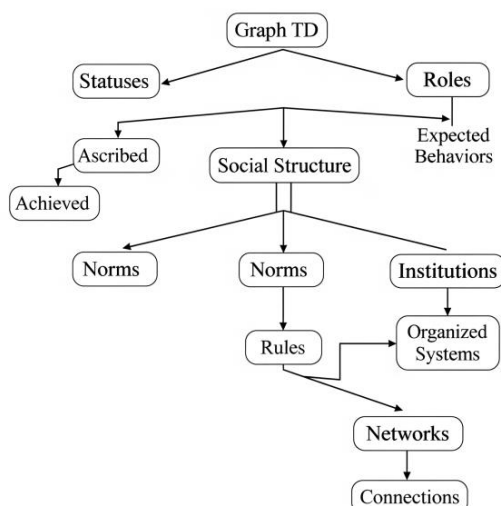
3.5 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - सामाजिक स्थिरता (जैसे, जाति मानदंड) की व्याख्या करता है।
 - सूक्ष्म और वृहद स्तरों (जैसे, संस्थाओं के लिए व्यक्तिगत भूमिकाएँ) को जोड़ता है।
- **सीमाएँ** :
 - स्थिरता पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, परिवर्तन की उपेक्षा की जाती है (जैसे, जातिगत गतिशीलता)।
 - एजेंसी की उपेक्षा करता है (जैसे, जाति के प्रति व्यक्तिगत प्रतिरोध)।

आलोचनाएँ :

- यूरोकेन्द्रित सिद्धांत (जैसे, पार्सन्स) भारतीय जाति पर पूरी तरह लागू नहीं हो सकते।
- स्थिर दृष्टिकोण गतिशील भारतीय संदर्भों (जैसे, डिजिटलीकरण) की उपेक्षा करता है।

Social Structure



4. संस्कृति

4.1 परिभाषा और महत्व

संस्कृति का तात्पर्य किसी समूह की साझा मान्यताओं, मूल्यों, मानदंडों, प्रतीकों और प्रथाओं से है, जो उसकी पहचान और व्यवहार को आकार देते हैं। समाजशास्त्र में, संस्कृति सामाजिक अंतःक्रियाओं को प्रभावित करने वाली एक गतिशील प्रणाली है।

- **मूल विचार** : संस्कृति सामाजिक जीवन को अर्थ और सुसंगति प्रदान करती है।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **एडवर्ड टायलर** : संस्कृति एक जटिल समग्रता के रूप में (जैसे, विश्वास, कलाएँ)।
 - **क्लिफोर्ड गीर्टज़** : प्रतीकों के जाल के रूप में संस्कृति (जैसे, अनुष्ठान)।
 - **रेमंड विलियम्स** : संस्कृति एक जीवन शैली के रूप में (जैसे, रोजमर्रा की प्रथाएँ)।
- **उद्देश्य** :
 - पहचान को आकार देता है (जैसे, भारतीय सांस्कृतिक विरासत)।
 - आचरण का मार्गदर्शन करता है (जैसे, त्यौहार के मानदंड)।
 - सामाजिक सामंजस्य को सुगम बनाता है (जैसे, साझा मूल्य)।

4.2 संस्कृति के घटक

- **मूल्य** : मूल विश्वास (जैसे, भारत में बुजुर्गों के प्रति सम्मान)।
- **मानदंड** : आचरण के नियम (जैसे, जाति-आधारित भोजन मानदंड)।
 - **लोक रीति-रिवाज** : अनौपचारिक रीति-रिवाज (जैसे, बड़ों का अभिवादन करना)।
 - **रीति-रिवाज** : नैतिक मानदंड (जैसे, विवाह नियम)।
- **प्रतीक** : अर्थपूर्ण वस्तुएं (जैसे, हिंदू धर्म में तिलक)।
- **विश्वास** : दृढ़ विश्वास (जैसे, भारतीय संस्कृति में कर्म)।
- **प्रथाएँ** : क्रियाएँ और अनुष्ठान (जैसे, दिवाली समारोह)।

स्मृति सहायक : **वीएनएसबीपी** (मूल्य, मानदंड, प्रतीक, विश्वास, व्यवहार)।

4.3 भारतीय संदर्भ में संस्कृति

- **जाति संस्कृति** : मानदंड और प्रथाएँ (जैसे, अंतर्विवाह, शुद्धता-प्रदूषण)।
 - **उदाहरण** : सांस्कृतिक-आर्थिक प्रथा के रूप में जजमानी प्रणाली।
- **धार्मिक संस्कृति** : अनुष्ठान और प्रतीक (जैसे, होली का रंग प्रतीकवाद)।
- **क्षेत्रीय संस्कृति** : भाषाई और पाक विविधता (जैसे, तमिल बनाम पंजाबी परंपराएँ)।
- **आधुनिक संस्कृति** : डिजिटल संस्कृति (जैसे, सोशल मीडिया उत्सव) और वैश्वीकरण (जैसे, पश्चिमी प्रभाव)।
- **उदाहरण** : बॉलीवुड एक सांस्कृतिक प्रतीक है जो परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण है।

4.4 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

- **कार्यात्मकतावाद (मालिनोवस्की)** : संस्कृति सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करती है (जैसे, सामंजस्य के लिए त्यौहार)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : संस्कृति अभिजात वर्ग के हितों (जैसे, ब्राह्मणवादी मानदंड) को प्रतिबिंबित करती है।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (गीर्टज़)** : बातचीत से तय अर्थ के रूप में संस्कृति (जैसे, त्यौहार के प्रतीक)।

- **भारतीय उदाहरण** : दिवाली को एकीकरणकारी मानने वाला कार्यात्मक दृष्टिकोण बनाम जातिगत अनुष्ठानों को दमनकारी मानने वाला संघर्षवादी दृष्टिकोण।

4.5 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - सामाजिक सामंजस्य (जैसे, साझा त्योहार प्रथाएँ) को समझाता है।
 - विविधता को दर्शाता है (जैसे, भारतीय क्षेत्रीय संस्कृतियाँ)।
- **सीमाएँ** :
 - एकरूपता पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, उपसंस्कृतियों की उपेक्षा की जाती है (जैसे, दलित संस्कृति)।
 - सांस्कृतिक सापेक्षवाद का खतरा (जैसे, जातिगत मानदंडों को उचित ठहराना)।

आलोचनाएँ :

- पश्चिमी परिभाषाएँ (जैसे, टायलर) भारतीय बहुलवाद को पूरी तरह से नहीं समझ पातीं।
- स्थैतिक दृष्टिकोण सांस्कृतिक परिवर्तन (जैसे, डिजिटल प्रभाव) की उपेक्षा करता है।

दृश्य सहायता : संस्कृति घटकों की तालिका

अवयव	विवरण	भारतीय उदाहरण
मान	मूल मान्यताएँ	बड़ों के प्रति सम्मान
मानदंड	आचरण के नियम	जाति आधारित भोजन
प्रतीक	अर्थपूर्ण वस्तुएँ	हिंदू धर्म में तिलक
मान्यताएँ	प्रतिबद्धता	कर्मा
आचरण	क्रियाएँ और अनुष्ठान	दिवाली उत्सव

5. पीवाईक्यू विश्लेषण (2019-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQ के आधार पर, सामाजिक संरचना और संस्कृति से प्रत्येक परीक्षा में 2-3 प्रश्न पूछे जाते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- सामाजिक संरचना या संस्कृति घटकों की परिभाषाएँ।
- भारतीय संदर्भों में अनुप्रयोग (जैसे, जाति, त्योहार)।
- सैद्धांतिक तुलना (जैसे, कार्यात्मकता बनाम संघर्ष सिद्धांत)।

5.1 नमूना PYQs

- **जून 2019** : समाजशास्त्र में सामाजिक संरचना क्या है?
 - **उत्तर** : सामाजिक संबंधों और संस्थाओं के संगठित पैटर्न।
 - **स्पष्टीकरण** : मूल अवधारणा परिभाषा का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2020** : संस्कृति भारतीय जाति प्रथाओं को कैसे आकार देती है?
 - **उत्तर** : अंतर्विवाह और शुद्धता-प्रदूषण जैसे मानदंडों के माध्यम से।
 - **स्पष्टीकरण** : भारतीय अनुप्रयोग का परीक्षण करता है।
- **जून 2021** : दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक संरचना किस पर आधारित है?
 - **उत्तर** : सामाजिक तथ्य जैसे मानदंड और संस्थाएँ।
 - **स्पष्टीकरण** : सैद्धांतिक समझ का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2022** : भारतीय संस्कृति में प्रतीक क्या है?
 - **उत्तर** : तिलक जैसी वस्तुएँ जिनका सांस्कृतिक अर्थ हो।
 - **स्पष्टीकरण** : संस्कृति घटक का परीक्षण करता है।
- **जून 2023** : संघर्ष सिद्धांत भारतीय जाति संरचना को किस प्रकार देखता है?
 - **उत्तर** : उच्च जाति के प्रभुत्व की एक प्रणाली के रूप में।
 - **स्पष्टीकरण** : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करता है।

5.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : 2020-2025 में भारतीय-विशिष्ट अनुप्रयोगों (जैसे, जाति, डिजिटल संस्कृति) और सैद्धांतिक बहसों पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। संरचना/संस्कृति को स्तरीकरण या परिवर्तन से जोड़ने वाले प्रश्न आम हैं।
- **अपेक्षित प्रश्न** :
 - जाति के उदाहरण सहित सामाजिक संरचना को परिभाषित करें।

- भारतीय त्योहारों पर संस्कृति का क्या प्रभाव पड़ता है?
- जाति संरचना के प्रकार्यवादी और संघर्षवादी दृष्टिकोणों की तुलना करें।
- 6. संशोधन के लिए मुख्य बिंदु
 - **सामाजिक संरचना** : रिश्तों के संगठित पैटर्न (एसआरएनआईएन)।
 - **संस्कृति** : साझा विश्वास, मूल्य, प्रथाएँ (वीएनएसबीपी)।
 - **कार्यात्मकतावाद** : संरचना/संस्कृति व्यवस्था बनाए रखती है (डर्कहेम)।
 - **संघर्ष सिद्धांत** : शक्ति असमानताओं को दर्शाता है (मार्क्स)।
 - **भारतीय संदर्भ** : संरचना के रूप में जाति, संस्कृति के रूप में त्यौहार।
- 7. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक
 - **सामाजिक संरचना घटकों के लिए स्मृति सहायक** : एसआरएनआईएन (स्थितियाँ, भूमिकाएँ, मानदंड, संस्थाएँ, नेटवर्क)।
 - **संस्कृति घटकों के लिए स्मृति सहायक** : वीएनएसबीपी (मूल्य, मानदंड, प्रतीक, विश्वास, व्यवहार)।
- 8. अभ्यास प्रश्न (एमसीक्यू)
 - **समाजशास्त्र में सामाजिक संरचना क्या है?**
 - a) व्यक्तिगत व्यवहार
 - b) संगठित सामाजिक संबंध
 - c) सांस्कृतिक प्रतीक
 - d) आर्थिक प्रणाली

उत्तर : b) संगठित सामाजिक संबंध

स्पष्टीकरण : समाज को आकार देने वाले पैटर्न।
 - **भारतीय समाजशास्त्र में संस्कृति में शामिल हैं:**
 - a) जातिगत अंतर्विवाह मानदंड
 - b) आर्थिक नीतियाँ
 - c) राजनीतिक संरचनाएँ
 - d) डिजिटल नेटवर्क

उत्तर : a) जातिगत अंतर्विवाह मानदंड

स्पष्टीकरण : साझा प्रथाएँ और नियम।
 - **दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक संरचना आधारित है:**
 - a) आर्थिक वर्ग
 - b) सामाजिक तथ्य
 - c) सांस्कृतिक प्रतीक
 - d) व्यक्तिगत एजेंसी

उत्तर : b) सामाजिक तथ्य

स्पष्टीकरण : मानदंड और संस्थान।
 - **भारतीय संस्कृति में प्रतीक है:**
 - a) एनएसएसओ सर्वेक्षण डेटा
 - b) हिंदू धर्म में तिलक
 - c) जाति पदानुक्रम
 - d) शहरी प्रवास

उत्तर : b) हिंदू धर्म में तिलक

स्पष्टीकरण : अर्थ के साथ वस्तु।
 - **संघर्ष सिद्धांत भारतीय जाति संरचना को इस रूप में देखता है :**
 - a) एकीकृत प्रणाली
 - b) उच्च जाति का प्रभुत्व
 - c) सांस्कृतिक सद्भाव
 - d) सामाजिक गतिशीलता

उत्तर : b) उच्च जाति का प्रभुत्व

स्पष्टीकरण : शक्ति असमानता को दर्शाता है।

9. हालिया घटनाक्रम

- **डिजिटल संस्कृति (2025)** : सोशल मीडिया सांस्कृतिक प्रथाओं को आकार देता है (जैसे, वर्चुअल दिवाली); डिजिटल नेटवर्क सामाजिक संरचना को पुनर्परिभाषित करते हैं।
- **भारतीय समाजशास्त्र** : जाति एक प्रमुख संरचनात्मक और सांस्कृतिक केंद्र बनी हुई है; एनईपी 2020 शैक्षिक संस्कृति को प्रभावित करती है।
- **वैश्विक रुझान** : वैश्वीकरण भारतीय संस्कृति को प्रभावित करता है (जैसे, पश्चिमी प्रभाव); डिजिटल संरचनाएं (जैसे, ऑनलाइन समुदाय) प्रमुखता प्राप्त करती हैं।

2: नेटवर्क, स्थिति और भूमिका, पहचान

1. यूनिट 3 का अवलोकन: बुनियादी अवधारणाएँ और संस्थाएँ

1.1 संदर्भ और महत्व

यूनिट 3 में मूलभूत समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ, संस्थाएँ, स्तरीकरण और सामाजिक परिवर्तन प्रक्रियाएँ शामिल हैं, जो सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए सैद्धांतिक लेंस प्रदान करती हैं। **नेटवर्क**, **स्थिति और भूमिका**, और **पहचान** प्रमुख अवधारणाएँ हैं जो सूक्ष्म-स्तरीय अंतःक्रियाओं (जैसे, व्यक्तिगत पहचान) और वृहद-स्तरीय संरचनाओं (जैसे, जाति नेटवर्क) को जोड़ती हैं। ये अवधारणाएँ समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं:

- **सामाजिक संबंध** : नेटवर्क किस प्रकार अंतःक्रियाओं को आकार देते हैं (जैसे, जातिगत गठबंधन)।
- **सामाजिक स्थितियाँ** : स्थितियाँ और भूमिकाएँ किस प्रकार व्यवहार को परिभाषित करती हैं (उदाहरणार्थ, लिंग भूमिकाएँ)।
- **स्वयं और समाज** : सामाजिक संदर्भों में पहचान कैसे बनती है (जैसे, दलित पहचान)।
- भारत में, ये अवधारणाएँ जातिगत गतिशीलता, लैंगिक भूमिकाओं और उभरती डिजिटल पहचानों को उजागर करती हैं, जिससे वे समाजशास्त्रीय जांच के लिए आवश्यक हो जाती हैं।

1.2 प्रासंगिकता

- **संकल्पनात्मक स्पष्टता** : परिभाषाएँ (जैसे, सामाजिक नेटवर्क, भूमिका संघर्ष)।
- **भारतीय अनुप्रयोग** : जाति नेटवर्क, लिंग भूमिकाएँ, जनजातीय पहचान।
- **सैद्धांतिक विश्लेषण** : अवधारणाओं को विचारकों से जोड़ना (उदाहरण के लिए, ग्रैनोवेटर, गोफ़मैन)।
- हाल के रुझान (2020-2025) डिजिटल नेटवर्क, अंतर-विषयक पहचान और भारतीय-विशिष्ट संदर्भों (उदाहरण के लिए, जाति, एनईपी 2020) पर जोर देते हैं, जो पेपर 1 के शोध योग्यता के साथ संरेखित होते हैं।

1.3 दायरा

यह भाग निम्नलिखित पर केंद्रित है:

- **नेटवर्क** : सिद्धांत, प्रकार और अनुप्रयोग।
- **स्थिति और भूमिका** : परिभाषाएँ, गतिशीलता और सिद्धांत।
- **पहचान** : गठन, प्रकार और सामाजिक संदर्भ।
- **भारतीय संदर्भ** : जाति, लिंग और डिजिटल अनुसंधान के अनुप्रयोग।
- **परीक्षा-उन्मुख विशेषताएं** : PYQ विश्लेषण, दृश्य सहायता, स्मृति सहायक, MCQ, वेटेज तालिकाएं।

2. सामाजिक नेटवर्क

2.1 परिभाषा और महत्व

सामाजिक **नेटवर्क** व्यक्तियों, समूहों या संस्थाओं के बीच संबंधों या कनेक्शनों का एक समूह है, जो सामाजिक संपर्क और संसाधन प्रवाह को आकार देता है। समाजशास्त्र में, नेटवर्क बताते हैं कि संबंध व्यवहार, शक्ति और अवसरों (जैसे, जाति गठबंधन, नौकरी नेटवर्क) को कैसे प्रभावित करते हैं।

- **मूल विचार** : नेटवर्क परस्पर निर्भरता की संरचनाएँ हैं, जो सामाजिक क्रिया को सुविधाजनक या बाधित करती हैं।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **मार्क ग्रैनोवेटर** : कमजोर संबंधों की ताकत (जैसे, परिचितों के माध्यम से नौकरी के अवसर)।
 - **जॉर्ज सिमेल** : संबद्धता के जाल के रूप में नेटवर्क।
 - **मैनुअल कास्टेल्स** : डिजिटल कनेक्शन द्वारा संचालित नेटवर्क समाज।

- **उद्देश्य :**

- सामाजिक संबंधों (जैसे, जाति विवाह नेटवर्क) का विश्लेषण करता है।
- संसाधन तक पहुंच (जैसे, नौकरी रेफरल) के बारे में बताता है।
- सामाजिक परिवर्तन को प्रासंगिक बनाता है (जैसे, डिजिटल नेटवर्क)।

2.2 सामाजिक नेटवर्क के घटक

- **नोड्स :** व्यक्ति या समूह (जैसे, जाति के सदस्य)।
- **संबंध :** नोड्स के बीच संबंध (जैसे, रिश्तेदारी, दोस्ती)।
- **मजबूत संबंध :** करीबी रिश्ते (जैसे, परिवार)।
- **कमज़ोर संबंध :** दूर के संपर्क (जैसे, परिचित)।
- **घनत्व :** परस्पर संबद्धता की डिग्री (जैसे, सघन जाति नेटवर्क)।
- **केन्द्रीयता :** नोड्स का महत्व (जैसे, जाति नेता)।
- **प्रवाह :** आदान-प्रदान किये गये संसाधन (जैसे, सूचना, समर्थन)।

स्मृति सहायक : एनटीडीसीएफ (नोड्स, टाईज़, डेंसिटी, सेंट्रलिटी, फ्लो)।

2.3 सोशल नेटवर्क के प्रकार

- **अहं-केन्द्रित नेटवर्क :** एक व्यक्ति के संबंधों पर ध्यान केन्द्रित करना (उदाहरणार्थ, एक दलित के सामाजिक संबंध)।
- **संपूर्ण नेटवर्क :** संपूर्ण समूह के संबंध (जैसे, गांव जाति नेटवर्क)।
- **औपचारिक नेटवर्क :** संगठित, संस्थागत संबंध (जैसे, जाति संघ)।
- **अनौपचारिक नेटवर्क :** व्यक्तिगत, स्वतःस्फूर्त संबंध (जैसे, मित्रता मंडल)।
- **डिजिटल नेटवर्क :** ऑनलाइन कनेक्शन (जैसे, ट्विटर/एक्स कार्यकर्ता समूह)।

स्मृति सहायक : EWFID (अहं-केन्द्रित, संपूर्ण, औपचारिक, अनौपचारिक, डिजिटल)।

2.4 भारतीय संदर्भ में सामाजिक नेटवर्क

- **जाति नेटवर्क :** विवाह और आर्थिक गठबंधन (जैसे, जजमानी प्रणाली)।
- **उदाहरण :** पुरोहिती भूमिकाओं के लिए ब्राह्मण नेटवर्क।
- **नातेदारी नेटवर्क :** परिवार-आधारित समर्थन (जैसे, संयुक्त परिवार संबंध)।
- **राजनीतिक नेटवर्क :** जाति आधारित वोट बैंक (जैसे, ओबीसी गठबंधन)।
- **डिजिटल नेटवर्क :** सोशल मीडिया सक्रियता (उदाहरणार्थ, #DalitLivesMatter)।
- **उदाहरण :** ट्विटर/एक्स पर दलित नेटवर्क अधिकारों के लिए लामबंद हो रहे हैं।

2.5 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

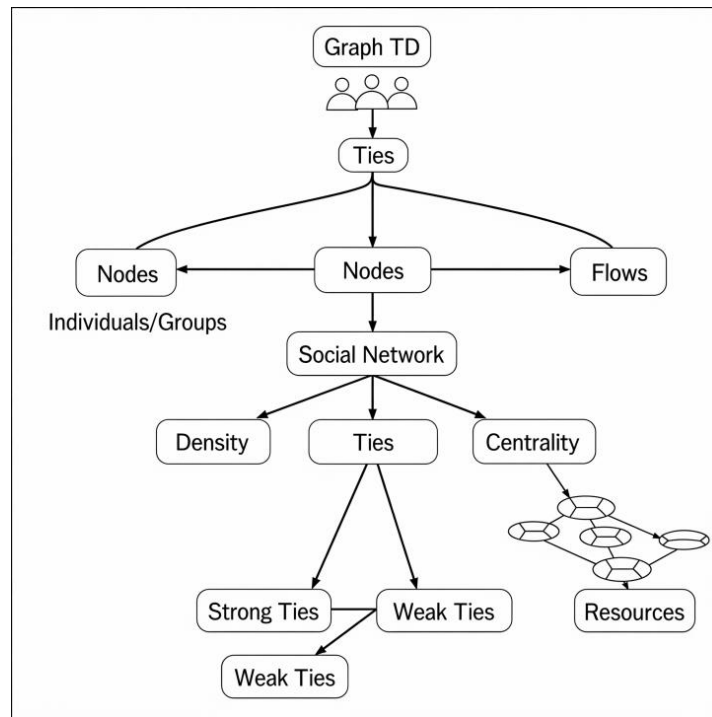
- **संरचनात्मक कार्यात्मकता :** नेटवर्क सामाजिक व्यवस्था बनाए रखते हैं (जैसे, जाति सामंजस्य)।
- **संघर्ष सिद्धांत :** नेटवर्क असमानताओं को मजबूत करते हैं (उदाहरण के लिए, उच्च जाति की नौकरी नेटवर्क)।
- **नेटवर्क सिद्धांत (ग्रैनोवेटर) :** कमजोर संबंध अवसरों को बढ़ाते हैं (जैसे, नौकरी रेफरल)।
- **भारतीय उदाहरण :** जाति नेटवर्क को एकीकृत करने वाला कार्यात्मक दृष्टिकोण बनाम बहिष्कार करने वाला संघर्षवादी दृष्टिकोण।

2.6 ताकत और सीमाएं

- **ताकत :**
- सामाजिक संबंधों (जैसे, जातिगत गठबंधन) का पता चलता है।
- संसाधन प्रवाह (जैसे, नौकरी तक पहुंच) की व्याख्या करता है।
- **सीमाएँ :**
- संबंधों पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, व्यक्तिगत एजेंसी की उपेक्षा की जाती है।
- डेटा-गहन (जैसे, नेटवर्क मानचित्रण)।

आलोचनाएँ :

- पश्चिमी सिद्धांत (जैसे, ग्रैनोवेटर) भारतीय जाति नेटवर्क को पूरी तरह से नहीं समझ पाते।
- नेटवर्क के भीतर शक्ति गतिशीलता को नजरअंदाज करता है (जैसे, उच्च जाति का प्रभुत्व)।



3. स्थिति और भूमिका

3.1 परिभाषा और महत्व

स्थिति वह सामाजिक स्थिति है जो समाज में एक व्यक्ति रखता है, जबकि **भूमिका** उस स्थिति से जुड़ा अपेक्षित व्यवहार है। समाजशास्त्र में, स्थिति और भूमिका सामाजिक संगठन और अंतःक्रियाओं (जैसे, जातिगत स्थितियाँ, लिंग आधारित भूमिकाएँ) की व्याख्या करती हैं।

- **मूल विचार** : स्थितियाँ और भूमिकाएँ सामाजिक व्यवहार की संरचना करती हैं, अधिकारों और दायित्वों को परिभाषित करती हैं।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **रॉबर्ट के. मेर्टन** : भूमिका सेट और भूमिका संघर्ष।
 - **राल्फ लिंटन** : स्थिति एक पद के रूप में, भूमिका एक गतिशील व्यवहार के रूप में।
 - **एर्विंग गोफमैन** : नाटकीय रूप में भूमिका प्रदर्शन।
- **उद्देश्य** :
 - सामाजिक अंतःक्रियाओं का आयोजन करता है (जैसे, शिक्षक-छात्र भूमिकाएँ)।
 - संघर्षों (जैसे, कार्य-परिवार भूमिका टकराव) को स्पष्ट करता है।
 - असमानता को सन्दर्भित करता है (जैसे, जातिगत स्थिति)।

3.2 स्थिति के प्रकार

- **प्रदत्त स्थिति** : जन्म के समय प्रदत्त (जैसे, जाति, लिंग)।
- **अर्जित स्थिति** : प्रयास से अर्जित (जैसे, डॉक्टर, राजनीतिज्ञ)।
- **मास्टर स्टेटस** : प्रमुख पहचान (जैसे, जाति समाज में दलित)।
- **अस्थायी स्थिति** : अल्पकालिक स्थिति (जैसे, अतिथि)।
- **स्थायी स्थिति** : दीर्घकालिक स्थिति (जैसे, माता-पिता)।

स्मृति सहायक : एएएमटीपी (निर्धारित, प्राप्त, मास्टर, अस्थायी, स्थायी)।

3.3 भूमिका गतिशीलता

- **भूमिका सेट** : एक स्थिति के लिए कई भूमिकाएँ (जैसे, शिक्षक के रूप में शिक्षक, संरक्षक)।
- **भूमिका संघर्ष** : भूमिका अपेक्षाओं का टकराव (जैसे, कामकाजी माँ का कार्य-परिवार संतुलन)।
- **भूमिका तनाव** : एक भूमिका के भीतर तनाव (जैसे, शिक्षक द्वारा बड़ी कक्षा का प्रबंधन)।
- **भूमिका निष्पादन** : किसी भूमिका में वास्तविक व्यवहार (जैसे, पुजारी के अनुष्ठान)।
- **भूमिका से बाहर निकलना** : किसी भूमिका को छोड़ना (जैसे, शिक्षण से सेवानिवृत्त होना)।

स्मृति सहायक : एस.सी.एस.पी.ई. (सेट, संघर्ष, तनाव, प्रदर्शन, निकास)।

3.4 भारतीय संदर्भ में स्थिति और भूमिका

- **जातिगत स्थिति** : निर्धारित पद (जैसे, ब्राह्मण, दलित)।
- **उदाहरण** : शारीरिक श्रम में भूमिका के साथ दलित स्थिति (ऐतिहासिक रूप से)।

- **लिंग भूमिकाएँ** : पितृसत्तात्मक अपेक्षाएँ (जैसे, गृहिणी के रूप में महिलाएँ)।
- **व्यावसायिक भूमिकाएँ** : प्राप्त स्थितियाँ (जैसे, आईटी पेशेवर भूमिकाएँ)।
- **आधुनिक परिवर्तन** : डिजिटल भूमिकाएँ (जैसे, प्रभावशाली व्यक्ति) और बदलती लिंग भूमिकाएँ (जैसे, कामकाजी महिलाएँ)।
- **उदाहरण** : दलित महिलाएँ पेशेवर और गृहिणी के रूप में भूमिका संघर्ष से जूझ रही हैं।

3.5 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

- **कार्यात्मकतावाद (पार्सन्स)** : स्थितियाँ और भूमिकाएँ सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करती हैं (जैसे, जातिगत भूमिकाएँ)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : शक्ति असमानताओं को प्रतिबिंबित करें (जैसे, उच्च जाति की स्थिति)।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (गोफमैन)** : निर्भाई गई पहचान के रूप में भूमिकाएँ (उदाहरणार्थ, लिंग आधारित भूमिका निभाना)।
- **भारतीय उदाहरण** : जातिगत भूमिकाओं को एकीकृत करने वाला कार्यात्मक दृष्टिकोण बनाम दमनकारी के रूप में संघर्षात्मक दृष्टिकोण।

3.6 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - सामाजिक संगठन (जैसे, जातिगत भूमिकाएँ) की व्याख्या करता है।
 - संघर्षों का विश्लेषण करता है (जैसे, लिंग भूमिका संघर्ष)।
- **सीमाएँ** :
 - स्थिर दृष्टिकोण, भूमिका परिवर्तन की उपेक्षा (जैसे, महिलाओं की भूमिका)।
 - भूमिका वार्ता में एजेंसी की उपेक्षा (जैसे, दलित प्रतिरोध)।

आलोचनाएँ :

- पश्चिमी रूपरेखा (जैसे, मर्टन) भारतीय जातिगत भूमिकाओं को पूरी तरह से नहीं समझ पाती।
- व्यक्तिगत रचनात्मकता की अपेक्षा संरचना पर अधिक जोर दिया जाता है।

दृश्य सहायता : स्थिति और भूमिका गतिशीलता की तालिका

अवधारणा	विवरण	भारतीय उदाहरण
श्रेय स्थिति	जन्म के समय नियत	दलित जाति
प्राप्त स्थिति	प्रयास से अर्जित	आईटी पेशेवर
भूमिका संघर्ष	परस्पर विरोधी भूमिका अपेक्षाएँ	कामकाजी माँ
भूमिका तनाव	भूमिका के भीतर तनाव	बड़ी कक्षा वाला शिक्षक
भूमिका प्रदर्शन	भूमिका में वास्तविक व्यवहार	पुरोहित के अनुष्ठान

4. पहचान

4.1 परिभाषा और महत्व

पहचान स्वयं या समूह से संबंधित होने की भावना है जो सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत कारकों द्वारा आकार लेती है। समाजशास्त्र में, पहचान बताती है कि व्यक्ति और समूह समाज के भीतर खुद को कैसे परिभाषित करते हैं (जैसे, जाति, लिंग)।

- **मूल विचार** : पहचान एक गतिशील, सामाजिक रूप से निर्मित प्रक्रिया है।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **जॉर्ज हर्बर्ट मीड** : सामाजिक संपर्क के माध्यम से स्वयं।
 - **एर्विंग गोफमैन** : सामाजिक परिवेश में प्रदर्शित पहचान।
 - **स्टुअर्ट हॉल** : पहचान तरल है, जो संस्कृति और शक्ति द्वारा आकार लेती है।
- **उद्देश्य** :
 - आत्म-अवधारणा (जैसे, दलित पहचान) को स्पष्ट करता है।
 - समूह गतिशीलता (जैसे, जनजातीय पहचान) का विश्लेषण करता है।
 - सामाजिक परिवर्तन (जैसे, डिजिटल पहचान) को प्रासंगिक बनाता है।

4.2 पहचान के प्रकार

- **व्यक्तिगत पहचान** : व्यक्तिगत आत्म-अवधारणा (जैसे, विशिष्ट लक्षण)।
- **सामाजिक पहचान** : समूह सदस्यता (जैसे, जाति, लिंग)।
- **सांस्कृतिक पहचान** : साझा सांस्कृतिक लक्षण (जैसे, तमिल पहचान)।
- **सामूहिक पहचान** : साझा समूह लक्ष्य (जैसे, दलित आंदोलन)।
- **डिजिटल पहचान** : ऑनलाइन स्व-प्रस्तुति (जैसे, ट्विटर/एक्स प्रोफाइल)।

स्मृति सहायक : पीएससीसीडी (व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, सामूहिक, डिजिटल)।

4.3 पहचान निर्माण

- **समाजीकरण** : मानदंड सीखना (जैसे, परिवार के माध्यम से जाति पहचान)।
- **अंतःक्रिया** : स्वयं से बातचीत करना (जैसे, कार्यस्थल में लिंग भूमिकाएँ)।

- **सांस्कृतिक संदर्भ** : विश्वासों को आकार देना (जैसे, अनुष्ठानों के माध्यम से हिंदू पहचान)।
 - **शक्ति गतिकी** : असमानता का प्रभाव (उदाहरणार्थ, उत्पीड़न के तहत दलित पहचान)।
 - **आत्म-चिंतन** : व्यक्तिगत समझ बनाना (जैसे, जाति पहचान पर सवाल उठाना)।
- स्मृति सहायक : एसआईसीपीएस** (समाजीकरण, अंतर्क्रिया, सांस्कृतिक, शक्ति, आत्म-प्रतिबिंब)।

4.4 भारतीय संदर्भ में पहचान

- **जातिगत पहचान** : सामाजिक रूप से निर्मित (जैसे, दलित, ब्राह्मण पहचान)।
- **उदाहरण** : सक्रियता के माध्यम से दलित पहचान को मजबूत करना (जैसे, भीम आर्मी)।
- **लिंग पहचान** : पितृसत्तात्मक मानदंड (जैसे, गृहिणी के रूप में महिलाओं की पहचान)।
- **जनजातीय पहचान** : सांस्कृतिक विशिष्टता (जैसे, गोंड जनजातीय गौरव)।
- **डिजिटल पहचान** : सोशल मीडिया प्रोफाइल (जैसे, #MeToo इंडिया पहचान)।
- **उदाहरण** : कानूनी मान्यता के माध्यम से पहचान स्थापित करने वाले ट्रांसजेंडर व्यक्ति (धारा 377 का निरसन)।

4.5 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

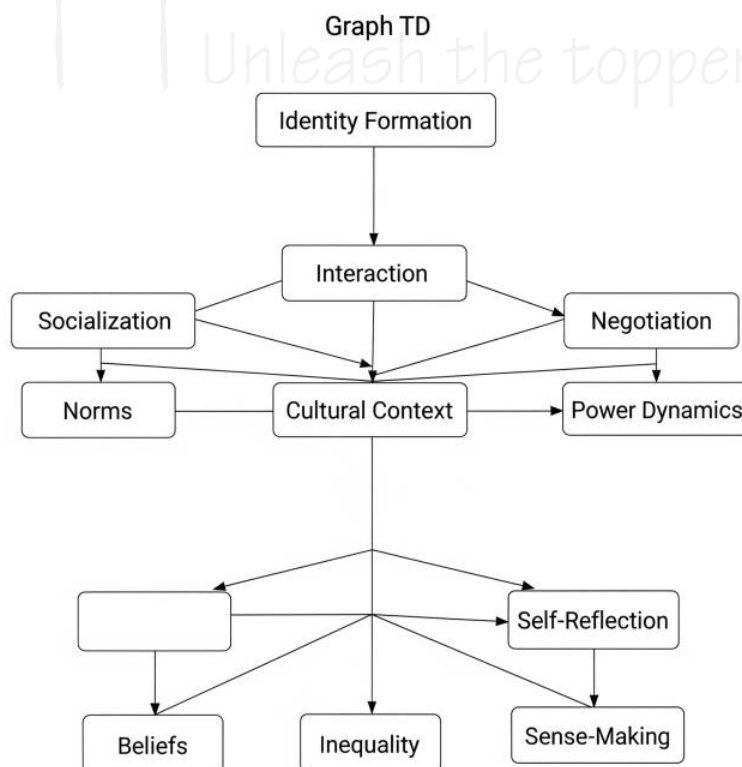
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (मीड)** : सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से पहचान (उदाहरणार्थ, अनुष्ठानों के माध्यम से जाति पहचान)।
- **संघर्ष सिद्धांत (हॉल)** : शक्ति द्वारा आकारित पहचान (उदाहरणार्थ, हाशिए पर पड़ी दलित पहचान)।
- **उत्तरआधुनिकतावाद (बाउमन)** : तरल, बहुविध पहचानें (जैसे, डिजिटल स्वयं)।
- **भारतीय उदाहरण** : लिंग पहचान वार्ता का अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण बनाम जाति पहचान उत्पीड़न का संघर्षवादी दृष्टिकोण।

4.6 ताकत और सीमाएं

- **ताकत** :
 - गतिशील आत्म-अवधारणाओं (जैसे, दलित पहचान) को दर्शाता है।
 - समूह सामंजस्य (जैसे, जनजातीय पहचान) की व्याख्या करता है।
- **सीमाएँ** :
 - सामाजिक निर्माण पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, तथा जीवविज्ञान (जैसे, लिंग) की उपेक्षा की जाती है।
 - तरलता विश्लेषण को जटिल बना देती है (उदाहरणार्थ, डिजिटल पहचान)।

आलोचनाएँ :

- पश्चिमी सिद्धांत (जैसे, मीड) भारतीय जातिगत पहचान को पूरी तरह से नहीं समझ पाते।
- पहचान पर संरचनात्मक बाधाओं (जैसे, जाति उत्पीड़न) को नजरअंदाज करता है।



5. अंतर्संबंध: नेटवर्क, स्थिति और भूमिका, पहचान

5.1 नेटवर्क और स्थिति/भूमिका

- **तालमेल** : नेटवर्क स्थितियों और भूमिकाओं को जोड़ते हैं (उदाहरण के लिए, जाति नेटवर्क ब्राह्मण भूमिकाओं को जोड़ते हैं)।
- **उदाहरण** : नौकरी नेटवर्क पेशेवर भूमिकाओं को सुदृढ़ करते हैं (जैसे, आईटी रेफरल)।
- **भारतीय संदर्भ** : जातिगत नेटवर्क विवाह की भूमिकाओं को आकार देते हैं (जैसे, अंतर्विवाह)।

5.2 नेटवर्क और पहचान

- **तालमेल** : नेटवर्क संबंधों के माध्यम से पहचान को आकार देते हैं (उदाहरण के लिए, दलित नेटवर्क सामूहिक पहचान को मजबूत करते हैं)।
- **उदाहरण** : डिजिटल नेटवर्क (ट्विटर/एक्स) नारीवादी पहचान को बढ़ावा देते हैं।
- **भारतीय संदर्भ** : जनजातीय नेटवर्क सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं (जैसे, गोंड त्योहार)।

5.3 स्थिति/भूमिका और पहचान

- **तालमेल** : स्थितियां और भूमिकाएं पहचान को परिभाषित करती हैं (उदाहरण के लिए, दलित स्थिति पहचान को आकार देती है)।
- **उदाहरण** : लिंग भूमिकाएं (गृहिणी) महिलाओं की पहचान को प्रभावित करती हैं।
- **भारतीय संदर्भ** : निर्धारित जाति का दर्जा (ब्राह्मण) सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है।

5.4 भारतीय संदर्भ

- **जाति** : नेटवर्क (विवाह गठबंधन), स्थितियां (दलित) और पहचान (सामूहिक दलित पहचान) आपस में जुड़ी हुई हैं।
- **लिंग** : नेटवर्क (महिला स्वयं सहायता समूह), भूमिकाएं (गृहिणी) और पहचान (नारीवादी) गतिशीलता को आकार देते हैं।
- **डिजिटल** : नेटवर्क (ट्विटर/एक्स), भूमिकाएं (प्रभावक) और पहचान (ऑनलाइन कार्यकर्ता) आधुनिकता को प्रतिबिंबित करते हैं।

6. पीवाईक्यू विश्लेषण (2019-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQ के आधार पर, नेटवर्क, स्थिति और भूमिका, तथा पहचान से प्रत्येक परीक्षा में 2-3 प्रश्न पूछे जाते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- अवधारणाओं या घटकों की परिभाषाएँ।
- भारतीय संदर्भों में अनुप्रयोग (जैसे, जाति, लिंग)।
- सैद्धांतिक दृष्टिकोण (उदाहरणार्थ, ग्रैनोवेटर, गोफमैन)।

6.1 नमूना PYQs

- **जून 2019** : समाजशास्त्र में सामाजिक नेटवर्क क्या है?
- **उत्तर** : व्यक्तियों या समूहों के बीच संबंध।
- **स्पष्टीकरण** : मूल अवधारणा परिभाषा का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2020** : भारतीय लिंग अनुसंधान में भूमिका संघर्ष क्या है?
- **उत्तर** : परस्पर विरोधी अपेक्षाएं (जैसे, कामकाजी मां का कार्य-परिवार संतुलन)।
- **स्पष्टीकरण** : भारतीय अनुप्रयोग का परीक्षण करता है।
- **जून 2021** : ग्रैनोवेटर के अनुसार, नौकरी के अवसर क्या बढ़ाते हैं?
- **उत्तर** : कमज़ोर संबंधों की मजबूती।
- **स्पष्टीकरण** : सैद्धांतिक समझ का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2022** : भारतीय संदर्भ में सामाजिक पहचान क्या है?
- **उत्तर** : जाति या लिंग जैसी समूह सदस्यता।
- **स्पष्टीकरण** : पहचान प्रकार का परीक्षण करता है।
- **जून 2023** : संघर्ष सिद्धांत जाति नेटवर्क को कैसे देखता है?
- **उत्तर** : उच्च जाति के प्रभुत्व को मजबूत करने के रूप में।
- **स्पष्टीकरण** : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करता है।

6.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : 2020-2025 में डिजिटल नेटवर्क, अंतर-विषयक पहचान और भारतीय-विशिष्ट संदर्भों (जैसे, जाति, लिंग) पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। अवधारणाओं को स्तरीकरण या परिवर्तन से जोड़ने वाले प्रश्न आम हैं।
- **अपेक्षित प्रश्न** :
 - जातिगत गठबंधन के उदाहरण के साथ सामाजिक नेटवर्क को परिभाषित करें।
 - भूमिका संघर्ष भारतीय कामकाजी महिलाओं को किस प्रकार प्रभावित करता है?
 - आधुनिक भारत में दलित पहचान निर्माण की व्याख्या कीजिए।

7. संशोधन के लिए मुख्य बिंदु

- **सामाजिक नेटवर्क** : नोड्स के बीच कनेक्शन (NTDCF, EWFID).
- **स्थिति और भूमिका** : सामाजिक स्थितियाँ और व्यवहार (एएएमटीपी, एससीएसपीई)।
- **पहचान** : स्वयं या समूह की भावना (पीएससीसीडी, एसआईसीपीएस)।
- **कार्यात्मकता** : नेटवर्क/भूमिकाएं व्यवस्था बनाए रखती हैं।
- **संघर्ष सिद्धांत** : असमानताओं को प्रतिबिंबित करता है (जैसे, जाति)।
- **भारतीय संदर्भ** : जाति नेटवर्क, लिंग भूमिकाएं, दलित पहचान।

8. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक

- **नेटवर्क घटकों के लिए स्मृति सहायक** : एनटीडीसीएफ (नोड्स, टाईज़, डेंसिटी, सेंट्रलिटी, फ्लो)।
- **नेटवर्क प्रकारों के लिए स्मृति सहायक** : EWFID (अहं-केंद्रित, संपूर्ण, औपचारिक, अनौपचारिक, डिजिटल)।
- **स्थिति प्रकारों के लिए स्मृति सहायक** : AAMTP (निर्धारित, प्राप्त, मास्टर, अस्थायी, स्थायी)।
- **भूमिका गतिशीलता के लिए स्मृति सहायक** : एससीएसपीई (सेट, संघर्ष, तनाव, प्रदर्शन, निकास)।
- **पहचान प्रकारों के लिए स्मृति सहायक** : पीएससीसीडी (व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, सामूहिक, डिजिटल)।
- **पहचान निर्माण के लिए स्मृति सहायक** : एसआईसीपीएस (समाजीकरण, अंतःक्रिया, सांस्कृतिक, शक्ति, आत्म-प्रतिबिंब)।

9. अभ्यास प्रश्न (एमसीक्यू)

- **समाजशास्त्र में सामाजिक नेटवर्क क्या है?**

- a) व्यक्तिगत व्यवहार
- b) समूहों के बीच संबंध
- c) सांस्कृतिक प्रतीक
- d) आर्थिक प्रणाली

उत्तर : b) समूहों के बीच संबंध

स्पष्टीकरण : अन्योन्याश्रितता की संरचनाएं।

- **भारतीय लिंग अनुसंधान में भूमिका संघर्ष है:**

- a) लगातार भूमिका अपेक्षाएँ
- b) कार्य-परिवार संतुलन टकराव
- c) आर्थिक स्थिरता
- d) सांस्कृतिक सद्भाव

उत्तर : b) कार्य-परिवार संतुलन टकराव

स्पष्टीकरण : महिलाओं के लिए अपेक्षाओं का टकराव।

- **त्रैनोवेटर के अनुसार कमजोर संबंधों की ताकत बढ़ाती है:**

- a) पारिवारिक बंधन
- b) नौकरी के अवसर
- c) जातिगत मानदंड
- d) धार्मिक अनुष्ठान

उत्तर : b) नौकरी के अवसर

स्पष्टीकरण : कमजोर संबंध संसाधनों से जुड़ते हैं।

- **भारत में सामाजिक पहचान में शामिल हैं:**

- a) व्यक्तिगत शौक
- b) जाति सदस्यता
- c) आर्थिक स्थिति
- d) डिजिटल नेटवर्क

उत्तर : b) जाति सदस्यता

स्पष्टीकरण : समूह आधारित पहचान।

- **संघर्ष सिद्धांत भारतीय जाति नेटवर्क को इस रूप में देखता है :**

- a) एकीकृत प्रणाली
- b) उच्च जाति का प्रभुत्व
- c) सांस्कृतिक सद्भाव
- d) सामाजिक गतिशीलता

उत्तर : b) उच्च जाति का प्रभुत्व

स्पष्टीकरण : शक्ति असमानता को दर्शाता है।

10. हालिया घटनाक्रम

- **डिजिटल नेटवर्क (2025)** : सोशल मीडिया (जैसे, ट्विटर/एक्स) कार्यकर्ता नेटवर्क और डिजिटल पहचान को आकार देता है।
- **भारतीय समाजशास्त्र** : जातिगत नेटवर्क केन्द्रीय बने हुए हैं; महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी के साथ लैंगिक भूमिकाएं विकसित होती हैं; आंदोलनों के माध्यम से दलित पहचान को दृश्यता मिलती है।
- **वैश्विक रुझान** : वैश्वीकरण भारतीय पहचानों को प्रभावित करता है (जैसे, प्रवासी नेटवर्क); डिजिटल भूमिकाएं (जैसे, प्रभावशाली व्यक्ति) स्थितियों को पुनः परिभाषित करती हैं।

3: समुदाय, प्रवासी, मूल्य, मानदंड और नियम

1. यूनिट 3 का अवलोकन: बुनियादी अवधारणाएँ और संस्थाएँ

1.1 संदर्भ और महत्व

यूजीसी नेट जेआरएफ समाजशास्त्र पाठ्यक्रम की इकाई 3 में मूलभूत समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ, संस्थाएँ, स्त्रीकरण और सामाजिक परिवर्तन प्रक्रियाएँ शामिल हैं, जो सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए सैद्धांतिक लेंस प्रदान करती हैं। **समुदाय**, **प्रवासी**, **मूल्य**, **मानदंड** और **नियम** प्रमुख अवधारणाएँ हैं जो निम्नलिखित को उजागर करती हैं:

- **सामाजिक सामंजस्य** : समुदाय किस प्रकार अपनेपन को बढ़ावा देते हैं (जैसे, गांव के संबंध)।
- **वैश्विक संबंध** : प्रवासी समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान कैसे बनाए रखते हैं (उदाहरणार्थ, भारतीय प्रवासी समुदाय)।
- **व्यवहार विनियमन** : मूल्य, मानदंड और नियम किस प्रकार कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं (उदाहरण के लिए, जाति मानदंड)।
- ये अवधारणाएँ भारत के विविध सामाजिक ताने-बाने को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, ग्रामीण समुदायों से लेकर वैश्विक प्रवासी नेटवर्क तक, और जाति, लिंग और धार्मिक संदर्भों में व्यवहार को आकार देने वाले मानक ढाँचे।

1.2 प्रासंगिकता

- **संकल्पनात्मक स्पष्टता** : परिभाषाएँ (जैसे, समुदाय के प्रकार, मानदंड)।
- **भारतीय अनुप्रयोग** : ग्राम समुदाय, एनआरआई प्रवासी, जाति मानदंड।
- **सैद्धांतिक विश्लेषण** : अवधारणाओं को विचारकों से जोड़ना (उदाहरण के लिए, टोनीज़, पार्सन्स)।
- हाल के रुझान (2020-2025) डिजिटल समुदायों, वैश्वीकृत प्रवासियों और मानक बदलावों (उदाहरण के लिए, लिंग मानदंड, एनईपी 2020) पर जोर देते हैं, जो पेपर 1 के शोध योग्यता के साथ संरेखित होते हैं। अवधारणाओं के अंतःविषय संबंध (उदाहरण के लिए, नृविज्ञान, सांस्कृतिक अध्ययन) उनकी परीक्षा प्रासंगिकता को बढ़ाते हैं।

1.3 दायरा

यह भाग निम्नलिखित पर केंद्रित है:

- **समुदाय** : परिभाषाएँ, प्रकार, विशेषताएँ और अनुप्रयोग।
- **प्रवासी** : अवधारणाएँ, ऐतिहासिक और समकालीन रूप, और प्रभाव।
- **मूल्य, मानदंड और नियम** : रूपरेखा, प्रकार और सामाजिक कार्य।
- **भारतीय संदर्भ** : जाति, लिंग, ग्रामीण समुदाय और प्रवासी समुदाय पर अनुप्रयोग।
- **परीक्षा-उन्मुख विशेषताएं** : PYQ विश्लेषण (2019-2025), दृश्य सहायता (प्रति अनुभाग 3-5), स्मृति सहायक सामग्री, 10-15 MCQ, वेटेज टेबल और परीक्षा रणनीति।

2. समुदाय

2.1 परिभाषा और महत्व

समुदाय व्यक्तियों का एक समूह है जो साझा विशेषताओं, हितों या भौगोलिक निकटता से बंधा होता है, जो अपनेपन और आपसी सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। समाजशास्त्र में, समुदाय सामाजिक संगठन की मूलभूत इकाइयाँ हैं, जो पहचान, अंतःक्रिया और सामाजिक सामंजस्य को आकार देते हैं।

- **मूल विचार** : समुदाय सामाजिक बंधन प्रदान करते हैं, साझा संबंधों के माध्यम से व्यक्तियों को एकीकृत करते हैं।
- **प्रमुख विचारक** :
 - **फर्डिनेंड टॉनीज़** : *गेसेलशाफ्ट* (समाज, अवैयक्तिक संबंध) से प्रतिष्ठित *जेमिन्सचाफ्ट* (समुदाय, अंतरंग संबंध)।
 - **एमिल दुर्खीम** : समुदाय सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं (उदाहरण के लिए, पारंपरिक समाजों में यांत्रिक एकजुटता)।
 - **रॉबर्ट पुटनाम** : समुदायों में सामाजिक पूंजी (जैसे, विश्वास, नेटवर्क)।
- **उद्देश्य** :
 - सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है (जैसे, ग्राम समुदाय)।
 - पहचान को आकार देता है (जैसे, आदिवासी समुदाय)।
 - सामूहिक कार्रवाई (जैसे, सामुदायिक आंदोलन) को सुविधाजनक बनाता है।

विस्तृत विवरण : समुदाय गतिशील सामाजिक संस्थाएँ हैं, जो साझा संबंधों द्वारा चिह्नित हैं, चाहे वे भूगोल (जैसे, गांव), संस्कृति (जैसे, धार्मिक समूह) या हितों (जैसे, पेशेवर संघ) पर आधारित हों। टोनीस *गेमेनशाफ्ट* भावनात्मक, आमने-सामने के बंधनों पर जोर देता है, जैसा कि भारतीय ग्रामीण गांवों में देखा जाता है जहां जाति और रिश्तेदारी के बंधन मजबूत सामुदायिक सामंजस्य बनाते हैं। इसके विपरीत, *गेसेलशाफ्ट* आधुनिक, संविदात्मक संबंधों को दर्शाता है, जो शहरी पेशेवर नेटवर्क में स्पष्ट है। दुर्खीम की एकजुटता की अवधारणा इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे समुदाय व्यक्तियों को एकीकृत करते हैं, जिससे विसंगति कम होती है (जैसे, भारत में मंदिर-आधारित समुदाय)। पुटनाम का सामाजिक पूंजी सिद्धांत विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने में समुदायों की भूमिका को रेखांकित करता है, जो सामूहिक कार्रवाई के लिए महत्वपूर्ण है (जैसे, ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूह)। समुदाय स्थिर नहीं हैं; वे आधुनिकीकरण, शहरीकरण और डिजिटलीकरण के साथ विकसित होते हैं, ऑनलाइन समुदायों (जैसे, ट्विटर/एक्स कार्यकर्ता समूह) जैसे नए रूप बनाते हैं।

2.2 समुदाय की विशेषताएँ

- **साझा पहचान :** समान लक्षण या लक्ष्य (जैसे, गांवों में जातिगत पहचान)।
- **अंतःक्रिया :** नियमित सामाजिक सहभागिता (जैसे, सामुदायिक उत्सव)।
- **अपनेपन की भावना :** भावनात्मक लगाव (जैसे, आदिवासी गौरव)।
- **साझा संसाधन :** सामूहिक पहुंच (जैसे, गांव की सार्वजनिक संपत्ति)।
- **मानदंड और मूल्य :** आचरण का मार्गदर्शन (जैसे, सामुदायिक नियम)।

स्मृति सहायक : एसआईबीआरएन (साझा पहचान, संपर्क, संबद्धता, संसाधन, मानदंड)।

विस्तृत विवरण :

- **साझा पहचान :** समुदायों को समानताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है, जैसे जाति (जैसे, दलित समुदाय), धर्म (जैसे, सिख समुदाय), या पेशा (जैसे, आईटी पेशेवर)। भारत में, जाट या यादव जैसे जाति-आधारित समुदाय विवाह और अनुष्ठानों के माध्यम से अलग-अलग सामाजिक पहचान साझा करते हैं।
- **बातचीत :** लगातार जुड़ाव से रिश्ते मजबूत होते हैं, जैसा कि भारतीय ग्रामीण त्योहारों (जैसे, होली) या मंदिर में होने वाली सभाओं में देखा जाता है। डिजिटल समुदाय जाति संघों के लिए व्हाट्सएप ग्रुप जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से बातचीत करते हैं।
- **अपनेपन की भावना :** भावनात्मक संबंध वफादारी को बढ़ावा देते हैं, जो आदिवासी समुदायों के गौरव (जैसे, गोंड सांस्कृतिक त्योहार) या शहरी आवास समितियों की एकजुटता में स्पष्ट है।
- **साझा संसाधन :** समुदाय संसाधनों को एकत्रित करते हैं, जैसे गांव के पानी के कुएं या शहरी सहकारी बैंक, जिससे सामूहिक कल्याण सुनिश्चित होता है।
- **मानदंड और मूल्य :** नियम व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, जैसे ग्रामीण भारत में अंतर्विवाह संबंधी जातिगत मानदंड या पारस्परिक सहायता के सामुदायिक मूल्य।

2.3 समुदाय के प्रकार

- **भौगोलिक समुदाय :** स्थान के आधार पर (जैसे, गाँव, पड़ोस)।
- **सांस्कृतिक समुदाय :** साझा सांस्कृतिक लक्षण (जैसे, धार्मिक समूह)।
- **कार्यात्मक समुदाय :** सामान्य हित या लक्ष्य (जैसे, व्यावसायिक संगठन)।
- **आभासी समुदाय :** ऑनलाइन समूह (जैसे, सोशल मीडिया समुदाय)।
- **कल्पित समुदाय :** प्रतीकात्मक संबद्धता (जैसे, एंडरसन के अनुसार राष्ट्रीय पहचान)।

स्मृति सहायक : जीसीएफवीआई (भौगोलिक, सांस्कृतिक, कार्यात्मक, आभासी, कल्पित)।

विस्तृत विवरण :

- **भौगोलिक समुदाय :** उत्तर प्रदेश के गांवों जैसे भारतीय गांव भौगोलिक समुदायों का उदाहरण हैं, जहां जाति और रिश्तेदारी के रिश्ते मजबूत बंधन बनाते हैं। शहरी पड़ोस (जैसे, मुंबई की चॉल) भी साझा स्थानों के साथ भौगोलिक समुदाय बनाते हैं।
- **सांस्कृतिक समुदाय :** भारत में सिख या मुस्लिम जैसे धार्मिक समुदाय सांस्कृतिक प्रथाओं को साझा करते हैं (जैसे, गुरुद्वारा सभाएँ, ईद समारोह)। जनजातीय समुदाय (जैसे, संथाल) अनुष्ठानों के माध्यम से सांस्कृतिक एकता बनाए रखते हैं।
- **कार्यात्मक समुदाय :** भारतीय चिकित्सा संघ या जाति-आधारित व्यवसाय संघ (जैसे, मारवाड़ी व्यापारी) जैसे व्यावसायिक समूह साझा लक्ष्यों के लिए एकजुट होते हैं।
- **आभासी समुदाय :** डिजिटल प्लेटफॉर्म समुदायों को बढ़ावा देते हैं, जैसे ट्विटर/एक्स दलित कार्यकर्ता समूह या व्हाट्सएप पड़ोस समूह, जो आधुनिक कनेक्टिविटी को दर्शाते हैं।
- **कल्पित समुदाय :** बेनेडिक्ट एंडरसन की अवधारणा भारत की राष्ट्रीय पहचान पर लागू होती है, जहां नागरिक कभी न मिलने के बावजूद भी जुड़ाव महसूस करते हैं (उदाहरण के लिए, गणतंत्र दिवस समारोह)।

2.4 भारतीय संदर्भ में समुदाय

- **ग्राम समुदाय** : पारंपरिक ग्रामीण समुदाय (जैसे, जजमानी प्रणाली) जाति-आधारित भूमिकाओं और आपसी सहयोग को एकीकृत करते हैं।
- **उदाहरण** : उत्तर प्रदेश के गांव जहां जाति परिषदें (पंचायतें) सामुदायिक मानदंडों को लागू करती हैं।
- **धार्मिक समुदाय** : हिंदू, मुस्लिम, सिख समुदाय अनुष्ठानों (जैसे, कुंभ मेला, ईद-उल-फितर) के माध्यम से एकजुटता को बढ़ावा देते हैं।
- **जनजातीय समुदाय** : गोंड, संधाल त्योहारों और रिश्तेदारी के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हैं।
- **शहरी समुदाय** : आवासीय सोसायटी या व्यावसायिक नेटवर्क (जैसे, बेंगलुरु के आईटी समुदाय) आधुनिक सामुदायिक स्वरूपों को प्रतिबिंबित करते हैं।
- **डिजिटल समुदाय** : सोशल मीडिया समूह (जैसे, #अम्बेडकरजयंती अभियान) आभासी एकजुटता पैदा करते हैं।
- **चुनौतियाँ** : शहरीकरण, प्रवासन और डिजिटल विभाजन पारंपरिक समुदायों को कमजोर कर रहे हैं, जबकि जातिगत तनाव जारी है।

विस्तृत भारतीय उदाहरण :

ग्रामीण राजस्थान में, गांव समुदाय जाति पदानुक्रम के आसपास संगठित हैं, जिसमें ब्राह्मण, राजपूत और दलित अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। जजमानी प्रणाली ऐतिहासिक रूप से आर्थिक और अनुष्ठान आदान-प्रदान के माध्यम से जातियों को बांधती है, जिससे परस्पर निर्भरता बढ़ती है। दिवाली जैसे सामुदायिक त्योहार साझा पहचान को मजबूत करते हैं, लेकिन जाति मानदंड (जैसे, अलग-अलग भोजन) पदानुक्रम को बनाए रखते हैं। आधुनिकीकरण तनाव का परिचय देता है, क्योंकि दलित पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती देने के लिए कार्यकर्ता समुदाय (जैसे, भीम आर्मी) बनाते हैं, जबकि शहरी प्रवासन एक सामुदायिक रूप बनाता है (जैसे, शहरों में राजस्थानी प्रवासी समूह)। क्लाउड जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म आभासी जाति समुदायों को सक्षम करते हैं, आवाजों को बढ़ाते हैं लेकिन विभाजन को भी मजबूत करते हैं।

2.5 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

- **कार्यात्मकता (डर्कहेम)** : समुदाय एकजुटता को बढ़ावा देते हैं, अराजकता को कम करते हैं (जैसे, गांव की एकजुटता)।
- **संघर्ष सिद्धांत (मार्क्स)** : समुदाय शक्ति असमानताओं को प्रतिबिंबित करते हैं (जैसे, गांवों में उच्च जाति का प्रभुत्व)।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (ब्लूमर)** : समुदाय साझा अर्थों (जैसे, त्योहार प्रतीकों) के माध्यम से उभरते हैं।
- **सामाजिक पूंजी सिद्धांत (पुटनम)** : समुदाय विश्वास और नेटवर्क (जैसे, एसएचजी) का निर्माण करते हैं।
- **भारतीय उदाहरण** : ग्राम समुदायों को एकीकृत करने वाला कार्यात्मक दृष्टिकोण बनाम जाति-आधारित बहिष्कार का संघर्षात्मक दृष्टिकोण।

विस्तृत विश्लेषण :

- **कार्यात्मकता** : दुर्खीम की यांत्रिक एकजुटता भारतीय गांवों पर लागू होती है, जहां साझा जाति और धार्मिक प्रथाएं (जैसे, मंदिर पूजा) सदस्यों को एकजुट करती हैं। सिख गुरुद्वारों जैसे समुदाय लंगर (सामुदायिक भोजन) के माध्यम से सामूहिक विवेक को मजबूत करते हैं।
- **संघर्ष सिद्धांत** : मार्क्सवादी दृष्टिकोण इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे उच्च जाति के समुदाय संसाधनों (जैसे, भूमि, जल) पर हावी होते हैं, दलितों को हाशिए पर रखते हैं। आदिवासी समुदायों को राज्य शोषण (जैसे, भूमि अधिग्रहण) का सामना करना पड़ता है, जो सत्ता संघर्ष को दर्शाता है।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद** : सामुदायिक पहचान प्रतीकों के माध्यम से तय की जाती है, जैसा कि होली के रंग अनुष्ठानों में देखा जाता है जो एकता का प्रतीक हैं या जाति-विशिष्ट त्योहार पदानुक्रम को मजबूत करते हैं।
- **सामाजिक पूंजी** : पुटनम का ढांचा बताता है कि कैसे ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूह विश्वास का निर्माण करते हैं, आर्थिक सशक्तिकरण को सक्षम बनाते हैं, लेकिन जातिगत विभाजन सेतु पूंजी को सीमित करते हैं।

2.6 ताकत और सीमाएँ

- **ताकत** :
 - सामाजिक सामंजस्य (जैसे, गांव की एकजुटता) की व्याख्या करता है।
 - विविधता को दर्शाता है (जैसे, आदिवासी, शहरी समुदाय)।
- **सीमाएँ** :
 - सद्भाव पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, संघर्षों (जैसे, जातिगत तनाव) की उपेक्षा की जाती है।
 - स्थैतिक दृश्य सामुदायिक विकास (जैसे, डिजिटल बदलाव) की उपेक्षा करता है।

आलोचनाएँ :

- पश्चिमी सिद्धांत (जैसे, टोनीज़) भारतीय जाति-आधारित समुदायों को पूरी तरह से नहीं समझ पाते।
- आंतरिक असमानताओं (जैसे, समुदायों के भीतर लिंग) को नजरअंदाज करता है।

- डिजिटल समुदाय पारंपरिक परिभाषाओं को चुनौती देते हैं।

दृश्य सहायता : सामुदायिक प्रकारों की तालिका

प्रकार	विवरण	भारतीय उदाहरण
ज्योग्राफिक	स्थान-आधारित	उत्तर प्रदेश गांव
सांस्कृतिक	साझा सांस्कृतिक विशेषताएँ	सिख समुदाय
कार्यात्मक	सामान्य लक्ष्य	मारवाड़ी व्यापारी
आभासी	ऑनलाइन समूह	ट्विटर/X दलित कार्यकर्ता
कल्पना	प्रतीकात्मक संबद्धता	भारतीय राष्ट्रीय पहचान

3. प्रवासी

3.1 परिभाषा और महत्व

प्रवासी का मतलब है अपनी मातृभूमि से दूर फैली हुई आबादी, जो अपने मूल स्थान के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक या आर्थिक संबंध बनाए रखती है। समाजशास्त्र में, प्रवासी अध्ययन पहचान, पारराष्ट्रीयता और सांस्कृतिक निरंतरता का पता लगाते हैं।

- **मूल विचार :** प्रवासी समुदाय वे समुदाय हैं जो सीमाओं के पार संबंध बनाए रखते हैं।
- **प्रमुख विचारक :**
 - **विलियम सफ़रन :** प्रवासी समुदाय, मातृभूमि से संबंध रखने वाले निर्वासित समूह के रूप में।
 - **रॉबिन कोहेन :** सांस्कृतिक संकरता के साथ वैश्विक प्रवासी।
 - **अवतार ब्रह्म :** प्रवासी समुदाय एक संबद्धता और भिन्नता का स्थान है।
- **उद्देश्य :**
 - अंतरराष्ट्रीय पहचान (जैसे, भारतीय प्रवासी) का विश्लेषण करता है।
 - सांस्कृतिक संकरता (जैसे, इंडो-कैरिबियन पहचान) का अन्वेषण करता है।
 - वैश्विक नेटवर्क (जैसे, धन प्रेषण प्रवाह) की जांच करता है।

विस्तृत विवरण :

प्रवासी समुदाय में मातृभूमि से भौतिक और प्रतीकात्मक संबंध शामिल होते हैं, जैसा कि भारतीय प्रवासियों के भारत के साथ त्योहारों, धन प्रेषण या राजनीतिक जुड़ाव के माध्यम से संबंधों में देखा जाता है। सफ़रन के मानदंडों में फैलाव, सामूहिक स्मृति और मातृभूमि अभिविन्यास शामिल हैं, जो यूके या यूएसए में भारतीय समुदायों पर लागू होते हैं। कोहेन ने स्वैच्छिक प्रवास और संकर पहचान को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया है, जो भारतीय और प्रशांत संस्कृतियों के मिश्रण को दर्शाते हैं। ब्रह्म ने प्रवासी समुदाय को बातचीत के एक स्थान के रूप में महत्व दिया है, जहाँ पहचान लिंग, वर्ग और नस्ल (जैसे, कनाडा में भारतीय महिलाएँ) द्वारा आकार दी जाती है। प्रवासी आर्थिक (जैसे, धन प्रेषण), सांस्कृतिक (जैसे, बॉलीवुड) और राजनीतिक (जैसे, एनआरआई मतदान) प्रवाह के माध्यम से वैश्वीकरण में योगदान करते हैं, लेकिन आत्मसात और भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं।

3.2 प्रवासी समुदाय की विशेषताएँ

- **प्रसार :** मातृभूमि से प्रवास (जैसे, खाड़ी देशों में भारतीय)।
- **सांस्कृतिक निरंतरता :** परंपराओं को बनाए रखना (जैसे, विदेशों में दिवाली)।
- **मातृभूमि संबंध :** भावनात्मक/आर्थिक संबंध (जैसे, धनप्रेषण)।
- **सामूहिक पहचान :** साझा संबद्धता (जैसे, भारतीय प्रवासी पहचान)।
- **संकरता :** मेजबान-गृह संस्कृतियों का सम्मिश्रण (जैसे, इंडो-अमेरिकन संस्कृति)।

स्मृति सहायक : डी.सी.एच.सी.एच. (प्रसार, सांस्कृतिक निरंतरता, मातृभूमि संबंध, सामूहिक पहचान, संकरता)।

विस्तृत विवरण :

- **प्रसार :** भारतीय प्रवासियों में औपनिवेशिक प्रवास (जैसे, कैरीबियाई देशों में अनुबंधित मजदूर), स्वतंत्रता के बाद का प्रवास (जैसे, अमेरिका में आईटी पेशेवर) और समकालीन श्रमिक प्रवास (जैसे, खाड़ी क्षेत्र में कामगार) शामिल हैं।
- **सांस्कृतिक निरंतरता :** प्रवासी समुदाय होली, भांगड़ा या तमिल मंदिर अनुष्ठानों जैसी प्रथाओं को संरक्षित करते हैं, जिससे उनकी पहचान मजबूत होती है।
- **स्वदेश संबंध :** अनिवासी भारतीय धन भेजते हैं (उदाहरण के लिए, 100 बिलियन डॉलर प्रतिवर्ष) और राजनीतिक रूप से भी जुड़े रहते हैं (उदाहरण के लिए, भारतीय चुनावों में समर्थन देना)।
- **सामूहिक पहचान :** भारतीय प्रवासी संगठन (जैसे, संयुक्त राज्य अमेरिका में AAPI) सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से साझा पहचान को बढ़ावा देते हैं।
- **संकरता :** भारतीय-कनाडाई भारतीय मूल्यों (जैसे, परिवार) को कनाडाई मानदंडों (जैसे, व्यक्तिवाद) के साथ मिश्रित करते हैं, जिससे विशिष्ट पहचान बनती है।